अंक 13 माह: अगस्त 2025

विश्वत

मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका

"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

**" ज्ञान से आत्मबल मिलता है, प्रेरणा से पथ मिलता है,
राष्ट्रसेवा से उद्देश्य मिलता है और मानवता से जीवन को अर्थ मिलता है।
यही समग्रता व्यक्ति को महान और समाज को उन्नत बनाती है। "**

— स्वामी विवेकानंद

संपादकीय

"विश्वत" – यह नाम अपने आप में संपूर्णता और समग्र दृष्टिकोण का प्रतीक है। पिछले 11 महीनों से लगातार प्रकाशित होकर, यह न्यूज़लेटर अब अपने प्रथम वार्षिक अंक के साथ एक नई उपलब्धि की ओर अग्रसर है। इस अवसर पर हमें गर्व और संतोष के साथ यह घोषणा करते हुए हर्ष हो रहा है कि "विश्वत" अब हमारे विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता, ऊर्जा और नवाचार का दर्पण बन गया है।

यह न्यूज़लेटर केवल सूचना का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारे संकल्प, उद्देश्य और प्रतिबद्धता का प्रतीक भी है। हमारी टैगलाइन, " ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये", अर्थात हम ऊर्जावान हैं, प्रभावशाली हैं और हमेशा अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित हैं, हमारे दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।

"विश्वत" का मुख्य उद्देश्य छात्रों, शिक्षकों और समाज के हर हिस्से से जुड़े व्यक्तियों के बीच संवाद, सहयोग और ज्ञान की साझेदारी को बढ़ावा देना है। यह हमारे विश्वविद्यालय के विविध कार्यक्रमों, उपलब्धियों और पहलों को उजागर करने का एक अनूठा मंच प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह हमारे छात्रों और संकाय सदस्यों के योगदान, नवाचार और उपलब्धियों को समेकित प्रचार को एक मंच प्रदान करता है।

एक वर्ष की निरंतरता पूरी होने पर हमें यह विश्वास है कि "विश्वत" न केवल विश्वविद्यालय की कहानी कह रहा है, बल्कि इसे और अधिक सशक्त, समृद्ध और व्यापक बनाने के लिए प्रेरणा भी दे रहा है। आने वाले वर्षों में यह और भी अधिक ज्ञानवर्धक, प्रेरक और सामुदायिक संवाद का केंद्र बने, यही हमारी आशा है।

अंततः, हम अपने सुधी पाठकों, योगदानकर्ताओं और समर्थकों का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने इस यात्रा को संभव बनाया और "विश्वत" को अपने उद्देश्य की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहयोग दिया।

संपादक
डिजिटल न्यूजलेटर टीम
विश्वत

अंक 13, क्रमांक -2,
माह:अगस्त 2025

विश्वत

पिछले वर्ष की उपलब्धियाँ:

विश्वत' न्यूज़लेटर का मुख्य उद्देश्य पाठकों तक शिक्षा, सूचना और प्रेरणा पहुँचाना है। यह शिक्षकों, विद्यार्थियों और समाज के विभिन्न वर्गों के लिए ज्ञान, कौशल विकास, नेतृत्व और सामाजिक चेतना को बढ़ावा देने का माध्यम है। इस वर्ष न्यूज़लेटर में प्रकाशित विषयों में शिक्षक स्तंभ, हिंदी की वैश्विक पहचान, छात्र कल्याण और विकास, भारतीय संविधान, भारतीय ज्ञान परंपरा, बजट और आम जनता, इंटरन्शिप और करियर, दीक्षांत समारोह, जीवन में विज्ञान, हुनर के हरकारे, आजीविका कौशल, प्रबंधन एवं विकास, तथा नेतृत्वशाला शामिल रहे।

विश्वत

अंक 13, क्रमांक -3,
माह: अगस्त 2025

पिछले वर्ष की उपलब्धियाँ:

अंक 5 माह: दिसंबर 2024

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।"
(बृहदारण्यक उपनिषद 1.3.28)

यह श्लोक भारतीय ज्ञान परंपरा के उस दृष्टिकोण को व्यक्त करता है, जो अज्ञान से ज्ञान, अंधकार से प्रकाश, और मृत्यु से अमरता की ओर यात्रा का आह्वान करता है। महा कुंभ इस आध्यात्मिक यात्रा और आत्मिक शुद्धि का प्रतीक है, जहां श्रद्धालु संगम पर स्नान कर अपने भीतर के अज्ञान और दोषों को त्यागने का संकल्प लेते हैं। यह आयोजन भारतीय संस्कृति में "सर्वे भवंतु सुखिनः" की भावना को भी दर्शाता है, जो समस्त मानवता के कल्याण और ज्ञान के प्रसार की आकांक्षा रखता है।

संपादकीय — भारतीय ज्ञान परंपरा और महा कुंभ: एक सांस्कृतिक धरोहर

भारत की भूमि सदा से ज्ञान और विचारों की जननी रही है। ऋग्वेद से लेकर उपनिषद, महाकाव्य से लेकर स्मृतियाँ, भारतीय ज्ञान परंपरा ने विश्व को दर्शन, विज्ञान, गणित, कला और चिकित्सा जैसे अनेकानेक क्षेत्रों में समृद्ध किया है। यह परंपरा न केवल अतीत में बल्कि आज भी प्रासंगिक है। इसकी जड़ें हमारी संस्कृति, जीवनशैली और आधुनिक सोच में गहराई तक पैठी हुई हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की शुरुआत वेदों से हुई। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों ने भारतीय समाज को जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन दिया है। यह परंपरा न केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विषयों तक सीमित है, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद और योग जैसे क्षेत्रों में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने इस परंपरा को वैश्विक स्तर पर प्रसारित किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल किताबों तक सीमित नहीं रही; यह जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त रही है। भारतीय संस्कृति में प्रतिदिन की प्रथाओं में भी ज्ञान की गहरी समझ का समावेश है। चाहे वह यज्ञ की प्रक्रिया हो, आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति हो, या योग का विज्ञान, सभी में गहन बौद्धिकता का समावेश है।

महा कुंभ भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत उदाहरण है। यह केवल एक धार्मिक मेला नहीं है, बल्कि एक ऐसा मंच है जहां विभिन्न दार्शनिक विचार, आध्यात्मिक अनुभव और सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। महा कुंभ का आयोजन हर 12 वर्षों में होता है, और यह समाज में आध्यात्मिक जागरूकता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ साधु-संत, विद्वान और श्रद्धालु मिलकर ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं।

आज के युग में जब पूरा विश्व विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है, भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। योग और आयुर्वेद जैसे प्राचीन विज्ञान वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण बन गए हैं। भारतीय दर्शन, जिसमें शांति और सह-अस्तित्व का संदेश निहित है, आज के समय में मानवता के लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध हो रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत का गौरव नहीं है; यह वर्तमान और भविष्य के लिए भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। महा कुंभ जैसे आयोजनों के माध्यम से यह परंपरा न केवल संरक्षित हो रही है, बल्कि पुनर्जीवित भी हो रही है। हमें इस अमूल्य धरोहर को समझने, आत्मसात करने और अगली पीढ़ी को सौंपने की आवश्यकता है।

अंक 6 माह: जनवरी 2025

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

" शिक्षा केवल व्यक्तिगत प्रगति का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास का आधार भी है। एक साक्षर और शिक्षित समाज ही दीर्घकालिक आर्थिक समृद्धि और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण की नींव रख सकता है। "

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन

संपादकीय — सबका विकास: बजट और आम जनता

बजट किसी भी राष्ट्र की आर्थिक दिशा और प्राथमिकताओं का प्रतिबिंब होता है। यह केवल संख्याओं का खेल नहीं, बल्कि सरकार की आर्थिक नीतियों, विकास योजनाओं और समाज के हर वर्ग के उत्थान की योजना का खाका होता है। हर वर्ष जब बजट प्रस्तुत किया जाता है, तो आम जनता की निगाहें इस पर टिकी होती हैं—क्या महंगाई पर काबू पाया जाएगा? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार होगा? क्या रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे?

बजट: आम जनता के लिए क्या मायने रखता है"

बजट सीधे तौर पर आम नागरिकों के जीवन को प्रभावित करता है। चाहे वह कर प्रणाली हो, सब्सिडी हो, शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश हो, या फिर आधारभूत संरचना का विकास—हर पहलू का प्रभाव जनता की आजीविका पर पड़ता है। इस वर्ष के बजट में जिन मुख्य बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है, वे इस प्रकार हैं:

रोजगार और आजीविका - सरकार ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से रोजगार सृजन पर जोर दिया है। स्टार्टअप इंडिया, मनरेगा और पीएम कौशल विकास योजना जैसी योजनाएँ युवाओं और श्रमिकों के लिए नए अवसर उपलब्ध करा सकती हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य - निःशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्तियाँ और स्वास्थ्य योजनाएँ आम जनता के लिए राहत लेकर आती हैं। सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य बीमा में बढ़ा हुआ निवेश नागरिकों के जीवन स्तर को सुधार सकता है।

महंगाई और कर प्रणाली - आम नागरिकों की क्रय शक्ति बनाए रखने के लिए बजट में करों में कुछ रियायतें दी गई हैं। साथ ही, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर नियंत्रण रखने के प्रयास किए गए हैं।

कृषि और ग्रामीण विकास - किसानों के लिए सब्सिडी, ऋण माफी, सिंचाई योजनाएँ, और न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) जैसी घोषणाएँ कृषि क्षेत्र को मजबूती प्रदान कर सकती हैं।

आधारभूत संरचना और डिजिटल इंडिया - सड़क, परिवहन, रेलवे, बिजली और इंटरनेट सेवाओं के विस्तार पर बल दिया गया है, जिससे आम जनता को अधिक सुविधाएँ प्राप्त होंगी।

'सबका विकास' की अवधारणा और बजट की भूमिका
'सबका विकास' केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक दृष्टिकोण है, जिसका उद्देश्य समाज के हर वर्ग तक विकास का लाभ पहुँचाना है। यह बजट भी इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए गरीबों, किसानों, महिलाओं, श्रमिकों और युवाओं के सशक्तिकरण पर केंद्रित है। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, वित्तीय समावेशन और छोटे एवं मध्यम उद्योगों के विकास के लिए ठोस प्रावधान किए गए हैं।

बजट केवल सरकार की आर्थिक योजना नहीं, बल्कि जनता की आकांक्षाओं और उम्मीदों का प्रतिबिंब भी है। यदि बजट की नीतियाँ सही दिशा में लागू की जाएँ, तो यह "सबका विकास" सुनिश्चित कर सकता है। अब आवश्यकता इस बात की है कि जनता बजट को केवल समाचारों तक सीमित न रखे, बल्कि इसकी नीतियों को समझे और अपने हितों के अनुसार इनका लाभ उठाए।

अंक 7 माह: फरवरी 2025

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

" सही समय का ज्ञान ही सफलता की कुंजी है। यह वह क्षण होता है जब हमें किसी अवसर को अपनाने या छोड़ने का एहसास होता है। यह समझ कि कब किसी यात्रा को विराम देना है, कब साहस दिखाना है, कब कोई इच्छा प्रकट करनी है, और कब हमें सक्रिय रूप से कार्य करना चाहिए – यही जीवन की सच्ची बुद्धिमत्ता है। "

संपादकीय — इंटर्नशिप: शिक्षा से करियर की ओर पहला कदम

इंटर्नशिप किसी भी छात्र के लिए शिक्षा से करियर की ओर बढ़ने का पहला ठोस कदम होती है। यह केवल व्यावहारिक अनुभव का माध्यम नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच है जहाँ छात्र अपने ज्ञान को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के अनुरूप परखते और निखारते हैं। वर्तमान प्रतिस्पर्धी दौर में केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि उद्योगों की वास्तविक आवश्यकताओं को समझना और उनके अनुरूप अपने कौशल का विकास करना भी उतना ही जरूरी हो गया है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर ज़ोर देते हुए कहा है—

"आज का युवा डिग्री के साथ-साथ स्किल भी चाहता है, क्योंकि उसे पता है कि यही उसकी सबसे बड़ी ताकत बनेगी।"

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में इंटर्नशिप को अनिवार्य बनाए जाने का उद्देश्य भी यही है कि छात्र अधिक उद्योग-मुखी और कौशल-संपन्न बनें। इंटर्नशिप उन्हें अपने रुचि क्षेत्र को समझने, नेटवर्क बनाने और अपने करियर के लिए सही दिशा चुनने का अवसर प्रदान करती है।

इस विशेषांक में इंटर्नशिप के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला जाएगा— इंटर्नशिप के अवसर, आवश्यक कौशल, सफलता की प्रेरणादायक कहानियाँ, और करियर में इसकी भूमिका। साथ ही, वर्चुअल इंटर्नशिप, स्टार्टअप इंटर्नशिप और वैश्विक अवसरों जैसे समकालीन विषयों पर भी चर्चा की जाएगी, जिससे छात्र बदलते परिदृश्य में खुद को बेहतर तरीके से ढाल सकें।

इंटर्नशिप केवल एक नौकरी पाने का साधन नहीं, बल्कि यह सीखने, विकसित होने और कार्यक्षेत्र की चुनौतियों के लिए खुद को तैयार करने का एक सशक्त माध्यम है। आइए, इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाएँ और अपने सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ें!

अंक 8 माह: मार्च 2025

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"ज्ञान का अंतिम उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना है।"

— डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

यह वचन दीक्षांत समारोह के दौरान विद्यार्थियों को यह स्मरण दिलाता है कि डिग्री केवल एक प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की ज़िम्मेदारी भी है।

कुलाधिपति संदेश — दीक्षांत समारोह के अवसर पर

डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा के द्वितीय दीक्षांत समारोह के अवसर पर कुलाधिपति श्री संतोष चौबे द्वारा विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की गईं। उन्होंने कहा:

प्रिय विद्यार्थियो
आपके विद्यार्थी जीवन के निर्णायक सोपान पर एवं अपनी उपाधि सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर आपका अभिवादन! डॉ. सी-वी रामन विश्वविद्यालय खंडवा की द्वितीय दीक्षांत समारोह की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

दीक्षांत समारोह छात्रों की शैक्षणिक यात्रा का वह पड़ाव है जहाँ से उपाधि प्राप्त कर छात्र व्यावसायिक जीवन यात्रा प्रारंभ करेंगे। सभी छात्र जीवन में एक जिम्मेदार व्यवसायी, एक सफल एवं जवाबदेह नागरिका बनने की ओर अग्रसर होंगे।

छात्र विश्वविद्यालय की रंग-बिरंगी चिरस्थाई स्मृतियो को, शिक्षा को समाज एवं राष्ट्र निर्माण में उपयोग करें और अपने निजी दायित्व का सफलता के साथ निर्वहन कर जीवन पर्यंत शिक्षा ग्रहण करते रहें।

आपके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ

श्री संतोष चौबे ,
कुलाधिपति,
डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा

इस एक वर्ष में न्यूज़लेटर ने शिक्षा और समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार प्रस्तुत किए। शिक्षक स्तंभ ने शिक्षकों को नई दिशा देने में मदद की, छात्र कल्याण और विकास संबंधी लेखों ने छात्रों के मार्गदर्शन में योगदान दिया, और हिंदी की वैश्विक पहचान पर प्रकाश डालते हुए हमारी भाषा और संस्कृति के महत्व को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया। इसके अलावा, बजट और आम जनता, करियर मार्गदर्शन, विज्ञान और हुनर विकास जैसे लेख छात्रों और समाज के लिए उपयोगी संसाधन बने।

पिछले वर्ष की उपलब्धियाँ:

अंक 9 माहः अप्रैल 2025

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN A.I.S.E.C.T. GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजयं
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"सभी वस्तुएँ (सत्त्व) किसी उद्देश्य (परार्थ) के लिए ही विद्यमान होती हैं।"
— महर्षि कणाद, वैशेषिक सूत्र

यह सूत्र बताता है कि विज्ञान, ज्ञान या किसी भी तत्व का उपयोग मानव कल्याण हेतु होना चाहिए — यह स्वयं में नहीं, उपयोगिता और उद्देश्य में अर्थपूर्ण है।

सम्पादकीय — "विज्ञान: जीवन को सरल, सुरक्षित और समृद्ध बनाने की कला"

विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं या वैज्ञानिक शोध पत्रों तक सीमित नहीं है। यह हमारे चारों ओर है — हमारी सांसों में, रसोई की भाप में, मोबाइल की घंटी में, इंटरनेट की तेज़ रफ्तार में, बिजली की रोशनी में और अस्पताल की चिकित्सा पद्धतियों में। वास्तव में, विज्ञान आज के युग का सबसे विश्वसनीय सहयात्री बन चुका है, जो हमारे हर कदम पर मौजूद है और हमारे जीवन को बेहतर, आसान और सुरक्षित बनाता है।

प्रातःकाल की नींद खुलने से लेकर रात्रि में सोने तक, विज्ञान हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। अलार्म घड़ी से जागना, ब्रश करना, नहाना, नाश्ता पकाना — हर प्रक्रिया में वैज्ञानिक तकनीक और आविष्कार छिपे हुए हैं। शिक्षा क्षेत्र में स्मार्ट क्लास और डिजिटल सामग्री ने ज्ञानार्जन को और अधिक प्रभावी बनाया है। मोबाइल फोन, लैपटॉप, वाई-फाई और सोशल मीडिया के माध्यम से संवाद के नए द्वार खुले हैं।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में विज्ञान ने क्रांति ला दी है। अब गंभीर बीमारियों का निदान मशीनों द्वारा सटीक रूप से संभव है और जीवन रक्षक दवाओं की खोज ने लाखों जीवन बचाए हैं। कृषि, उद्योग, यातायात, संचार, अंतरिक्ष अनुसंधान — हर क्षेत्र में विज्ञान ने मानव जाति को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

किन्तु, विज्ञान का यह वरदान तभी उपयोगी है जब हम इसे विवेक के साथ प्रयोग करें। अंधाधुंध तकनीकी उपभोग ने पर्यावरणीय असंतुलन, प्रदूषण और सामाजिक अलगाव जैसे संकट भी खड़े किए हैं। अतः यह आवश्यक है कि विज्ञान का उपयोग मानवता की सेवा में, प्रकृति के संतुलन के साथ और नैतिक मूल्यों के अनुरूप किया जाए।

आज आवश्यकता है विज्ञान के प्रति एक जागरूक, समझदार और जिम्मेदार दृष्टिकोण की — ताकि विज्ञान न केवल हमारी ज़रूरतों को पूरा करे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, समृद्ध और स्थायी भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करे।

– सम्पादक
"विश्वत" – विश्वविद्यालय डिजिटल न्यूज़लेटर

अंक 10 माहः मई 2025

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN A.I.S.E.C.T. GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजयं
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

।। अप्प दीपो भवः ।।

जिसका शाब्दिक अर्थ है — "स्वयं अपने लिए दीपक बनो।"
।। अप्प दीपो भवः ।। यह उपदेश आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान और आंतरिक आलोक की प्रेरणा देता है।

संपादकीय — हुनर के हरकारे

"हुनर वो दीप है, जो स्वयं जलकर दूसरों का पथ आलोकित करता है।" इस अंक में हम ऐसे ही दीपों की बात कर रहे हैं — हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों और विश्वविद्यालय समुदाय के उन प्रतिभावान हस्ताक्षरों की, जिनका कौशल न केवल उनकी पहचान बना, बल्कि हमारे परिसर को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

"हुनर के हरकारे" शीर्षक इस विशेषांक में हम उन कहानियों को समर्पित हैं जो हमें यह विश्वास दिलाती हैं कि सीखने की कोई सीमा नहीं होती और हर हाथ, हर मन में कोई न कोई विशिष्ट योग्यता छिपी होती है — बस उसे अवसर और मंच चाहिए।
चाहे वह एक छात्र का स्टार्टअप हो, किसी प्रोफेसर की नवाचार आधारित शोध परियोजना, किसी कलाकार की रेखाचित्र-श्रृंखला या किसी संगीत प्रेमी की प्रस्तुति — हर हुनर यहाँ अपना स्थान पाता है। हम मानते हैं कि शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है; यह उस समग्र विकास की प्रक्रिया है जिसमें सोच, रचना, प्रयोग

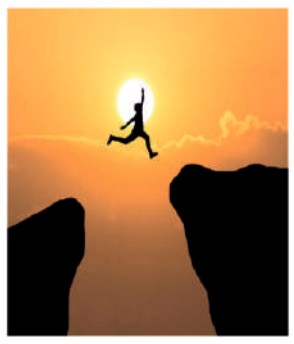

और प्रस्तुति का सामंजस्य हो।

यह अंक इस विश्वास को भी बल देता है कि हुनर ही भविष्य है। आज की दुनिया में रोजगार और उद्यमिता दोनों की राहें कौशल से होकर ही गुजरती हैं। अतः हम विद्यार्थियों से यही अपेक्षा करते हैं कि वे अपनी प्रतिभा को पहचानें, उसे मांजें और आत्मनिर्भरता की दिशा में सशक्त कदम बढ़ाएं।

आइए, हम सब मिलकर हुनर को उसकी असल जगह दें — समाज और शिक्षा दोनों के केंद्र में।

- संपादकीय टीम
विश्वत | सी. वी. रामन विश्वविद्यालय खण्डवा

अंक 11 माहः जून 2025

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN A.I.S.E.C.T. GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजयं
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य कौशल और आत्मविश्वास के साथ जीवन जीने की तैयारी करना है।" "अगर हम युवाओं को सही शिक्षा और कौशल दें, तो वे न केवल अपना जीवन संवारेंगे, बल्कि देश की तकदीर भी बदल देंगे।"

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

संपादकीय

आजीविका कौशल प्रबंधन एवं विकास : तकनीकी नवाचार के माध्यमों से सशक्त भविष्य की ओर

आज की दुनिया तेजी से बदल रही है। वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और नवाचार के इस युग में जहाँ रोजगार के स्वरूप में निरंतर परिवर्तन हो रहा है, वहीं यह आवश्यक हो गया है कि आजीविका कौशल को भी समय के अनुरूप न केवल विकसित किया जाए, बल्कि उसका कुशल प्रबंधन भी सुनिश्चित किया जाए। ऐसे समय में तकनीकी नवाचार इस क्षेत्र में एक क्रांतिकारी भूमिका निभा रहे हैं।

तकनीक अब केवल आईटी सेक्टर तक सीमित नहीं रही; यह कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, विपणन, व्यापार, दस्तकारी और निर्माण जैसे विविध क्षेत्रों में नई संभावनाओं के द्वार खोल रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, ड्रोन तकनीक, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और वर्चुअल रियलिटी जैसे नवाचार न केवल कार्य दक्षता को बढ़ा रहे हैं, बल्कि युवाओं को कौशल के ऐसे अवसर दे रहे हैं जो पहले केवल कल्पना मात्र थे।

शिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण केंद्रों और नीति निर्माताओं के सामने अब सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वे इन तकनीकों को स्थानीय जरूरतों और सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे के अनुरूप ढालें। जब तक तकनीकी नवाचारों को जमीनी स्तर पर व्यावहारिक बनाकर जीवन से जोड़ा नहीं जाएगा, तब तक उनका प्रभाव सीमित ही रहेगा।

डिजिटल साक्षरता, मोबाइल आधारित प्रशिक्षण, ऑनलाइन स्किल प्लेटफॉर्म, ओपन एजुकेशन रिसोर्सेज और भाषा आधारित तकनीकी सामग्री अब गांवों और छोटे शहरों में बैठे युवा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का साहस दे रही है। यह समय है जब हमें यह समझना होगा कि आजीविका कौशल केवल जीविका अर्जन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक आत्मनिर्भरता, आर्थिक न्याय और मानव गरिमा का भी आधार है। तकनीकी नवाचारों के माध्यम से यदि हम युवाओं को आत्मनिर्भर बना सके, तो एक समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ विकास की ओर बढ़ना संभव है।

इस अंक में हम ऐसे ही प्रयासों, उदाहरणों और संभावनाओं की पड़ताल कर रहे हैं, जो तकनीक को केवल 'साधन' नहीं, बल्कि 'सशक्तिकरण' के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

— संपादक
डिजिटल न्यूजलेटर टीम
'Vishvaat'

अंक 12 माहः जुलाई 2025

विश्वत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN A.I.S.E.C.T. GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्ठला विजयं
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

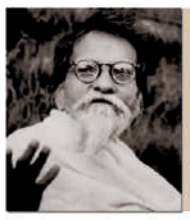

मास का सूत्र

" नेतृत्व वही है, जो दूसरों को साथ लेकर चल सके। "

:- विनोबा भावे

संपादकीय

नेतृत्वशाला: भविष्य के पथप्रदर्शकों की पाठशाला

आज के बदलते सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में नेतृत्व केवल एक पद या अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी, दृष्टि और सेवा का नाम है। इसी संदर्भ में "नेतृत्वशाला" का महत्व और भी बढ़ जाता है — एक ऐसी प्रयोगशाला जहाँ व्यक्तित्व का निर्माण होता है, सोच को दिशा मिलती है और कार्य को उद्देश्य।

नेतृत्वशाला का मूल आधार है अन्तःजनित विकास — यानी नेतृत्व की यात्रा भीतर से शुरू होती है। जब व्यक्ति अपने विचारों, मूल्यों और दृष्टिकोण को परिष्कृत करता है, तभी वह समाज और संगठन को सशक्त रूप से दिशा दे सकता है। इसके साथ विकेन्द्रित नियोजन का सिद्धांत यह सिखाता है कि नेतृत्व एक व्यक्ति तक सीमित न रहकर, सामूहिक भागीदारी में पनपना चाहिए।

स्थानिक नेतृत्व और स्थानिक संगठन एवं स्थानिक कार्य नियोजन नेतृत्वशाला के वे स्तंभ हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि नेतृत्व जड़ों से जुड़ा हो, स्थानीय जरूरतों और संस्कृतियों को समझते हुए वैश्विक दृष्टिकोण अपनाए।

इतिहास और विचारधारा में नेतृत्व के अनेक सिद्धांत मिलते हैं — महान व्यक्ति का सिद्धांत हमें यह बताता है कि नेतृत्व जन्मजात गुणों से उत्पन्न हो सकता है, लेकिन आधुनिक दृष्टिकोण यह भी मानता है कि सही प्रशिक्षण, अनुभव और अवसर से कोई भी व्यक्ति नेतृत्व की क्षमता विकसित कर सकता है।

आज हमें ऐसी नेतृत्वशालाओं की आवश्यकता है, जो केवल भाषण या उपदेश न दें, बल्कि वास्तविक जीवन के अनुभव, अनुशासन और नवाचार के माध्यम से नए नेतृत्व को तैयार करें।

LEADERSHIP LAB
नेतृत्वशाला

ऐसे व्यक्ति जो न केवल संगठनों को, बल्कि समाज को भी नई दिशा देने में सक्षम हों।

नेतृत्वशाला केवल एक संस्थान नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है — एक ऐसी पाठशाला, जहाँ किताबों के साथ-साथ जीवन की चुनौतियाँ भी गुरु बनती हैं, और जहाँ हर विद्यार्थी एक दिन किसी और के जीवन में पथप्रदर्शक बनता है।

"नेतृत्वशाला: आत्मविकास से समाजविकास की ओर।"

— संपादक
डिजिटल न्यूजलेटर टीम
'विश्वत'

वृतांत

१. गांधी दर्शन और कौशल विकास कार्यशाला का शुभारंभ

देश के विकास के लिए गांधी दर्शन में संभावनाओं की दृष्टि पर चिंतन जरूरी ,संतोष गुप्ता डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय और खादी ग्रामोद्योग आयोग के संयुक्त तत्वावधान में "गांधी दर्शन औरकौशल विकास" विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ रामन सभागार में हुआ। मुख्य अतिथि संतोषगुप्ता ने स्वावलंबन, स्वदेशी और आधुनिक तकनीक के समावेश की आवश्यकता पर जोर दिया, जबकि विशेषअतिथि डॉ. आर. एस. सिसोदिया ने शिक्षा में तकनीकी और कौशल के संतुलन को महत्वपूर्ण बताया। कुगुरु डॉ. अरुण जोशी ने गांधी जी के विचारों को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बताते हुए कौशल और उद्यमिता को बढ़ावा देने पर बल दिया। इस अवसर पर वाद-विवाद और निबंध प्रतियोगिताओं में १२० प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सीमा शर्मा और डॉ. वरुण महाजन ने किया, संचालन पूजा भालेराव ने किया और आभार आशीष राजपूत ने व्यक्त किया।

२. गांधी दर्शन और कौशल विकास कार्यशाला का समापन

खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी एवं अतिथियों के मार्गदर्शन के साथ दो दिवसीय सेमिनार संपन्न आईसेक्ट डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय और खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा आयोजित "गांधी दर्शन और कौशल विकास" विषयक दो दिवसीय कार्यशाला का समापन खादी ग्रामोद्योग उत्पादों की प्रदर्शनी और अतिथि मार्गदर्शन के साथ हुआ। अतिथि वक्ताओं में सुशील भगत, सपना विजयकर, अजितेश आर्य और जमील कुरेशी ने स्वरोजगार, स्टार्टअप, मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया योजनाओं तथा लघु उद्योगों के प्रोत्साहन पर जानकारी दी। कुलगुरु डॉ. अरुण जोशी ने विश्वविद्यालय की ग्रामीण कौशल, उद्यमिता और अनुसंधान को प्रोत्साहित करने वाली पहलें साझा कीं। प्रदर्शनी में अंजली रेतवानी, कला कमले, माधवी जोशी सहित कई उद्यमियों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सीमा शर्मा ने, संचालन आशीष राजपूत ने और आभार नरेंद्र नीलकंठ ने व्यक्त किया।

३. डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय एवं खादी ग्रामोद्योग आयोग का संयुक्त लोक शिक्षण कार्यक्रम (पी.ई.पी.)

ग्रामोद्योग योजनांतर्गत एक दिवसीय लोक शिक्षण कार्यक्रम (पी.ई.पी.) में ग्रामीणों और छात्रों को प्रेरित कियाडॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय एवं ग्रामोद्योग आयोग के संयुक्त तत्वावधान में जनपद पंचायत सभागृह में ग्रामोद्योग विकास योजनांतर्गत एक दिवसीय लोक शिक्षण कार्यक्रम (पी.ई.पी.) आयोजित हुआ, जिसमें ग्रामीणों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सुरेंद्र पाल, सुशील भगत और जमील कुरैशी ने ग्रामोद्योग योजनाओं, प्रशिक्षण, अनुदान और स्वरोजगार के अवसरों पर विस्तृत जानकारी दी तथा प्रेरक सफलता की कहानियां साझा कीं। छेगाँव माखन और कलदाखेड़ी की महिलाओं ने समूह पंजीयन की पहल की, जिसे विश्वविद्यालय ने पूर्णसहयोग का आश्वासन दिया। कुलगुरु डॉ. अरुण जोशी ने ग्रामीण आर्थिक सशक्तिकरण को विश्वविद्यालय की प्राथमिकता बताया और २० गांवों में प्रचार-प्रसार व समूह गठन के निर्देश दिए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ.सीमा शर्मा, संचालन सत्यं बडगूजर, स्वागत उधबोधन प्राध्यापक ज्योति गौर और आभार डॉ. नुसरत शेख नेव्यक्त किया।

4. डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय में 'NEP सारथी एक्टिविटी –

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय में 'NEP सारथी एक्टिविटी – भारतीय ज्ञान प्रणाली' पर पैनल चर्चा डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा में 'NEP सारथी एक्टिविटी – इंडियन नॉलेज सिस्टम' विषय पर विशेष पैनल चर्चा आयोजित हुई, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताओं और नई शिक्षा नीति में उसकी प्रासंगिकता पर विचार हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. प्रभु नारायण मिश्र ने महाभारत के उदाहरणों से जीवन मूल्यों और पारंपरिक-आधुनिक शिक्षा के समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया। कुलगुरु डॉ. अरुण रमेश जोशी ने इसे सांस्कृतिक-शैक्षणिक पहचान का आधार बताते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण बताया। कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी ने ऐसे कार्यक्रमों को विचारों के आदान–प्रदान का मंच बताया। कार्यक्रम कासंचालन प्रो. ज्योति गौर वर्मा ने किया, संयोजन डॉ. नुसरत शेख व प्रो. दीपक कौशल ने किया और इसमेंप्राध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

5. डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय में विशाल रक्तदान शिविर एवं कबड्डी–वॉलीबॉल खेल प्रतियोगिता संपन्न कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने वनमाली संप्रेषण केंद्र के वीडियो स्टूडियो का लोकार्पण किया

डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर विशाल रक्तदान शिविर और कबड्डी–वॉलीबॉल प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।रक्तदान शिविर में बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं एवं प्राध्यापकों ने भाग लिया और लगभग 70 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त हुआ। कुलपति डॉ. अरुण जोशी, कुलसचिव रवि चतुर्वेदी एवं मुख्य अतिथियों ने रक्तदान को समाजहित का पुनीत कार्य बताया। इसी अवसर पर कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने वनमाली संप्रेषण केंद्र के वीडियो स्टूडियो एवं आईक्यूएसी विभाग का लोकार्पण किया और प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दीं।

4. डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय में 'NEP सारथी एक्टिविटी –

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय में 'NEP सारथी एक्टिविटी – भारतीय ज्ञान प्रणाली' पर पैनल चर्चा डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा में 'NEP सारथी एक्टिविटी – इंडियन नॉलेज सिस्टम' विषय पर विशेष पैनल चर्चा आयोजित हुई, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताओं और नई शिक्षा नीति में उसकी प्रासंगिकता पर विचार हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. प्रभु नारायण मिश्र ने महाभारत के उदाहरणों से जीवन मूल्यों और पारंपरिक-आधुनिक शिक्षा के समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया। कुलगुरु डॉ. अरुण रमेश जोशी ने इसे सांस्कृतिक-शैक्षणिक पहचान का आधार बताते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण बताया। कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी ने ऐसे कार्यक्रमों को विचारों के आदान–प्रदान का मंच बताया। कार्यक्रम कासंचालन प्रो. ज्योति गौर वर्मा ने किया, संयोजन डॉ. नुसरत शेख व प्रो. दीपक कौशल ने किया और इसमेंप्राध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

फीडबैक कॉर्नर

"आपके विचार, हमारी प्रेरणा"

पिछले एक वर्ष में पाठकों और विश्वविद्यालय समुदाय से 'विश्वत' को अत्यंत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। शिक्षकों ने इसे कक्षा में संदर्भ सामग्री के रूप में अपनाया, छात्रों ने इसे करियर मार्गदर्शन और प्रेरणा का स्रोत माना, और विश्वविद्यालय परिवार ने इसे ज्ञान साझा करने और विचार-विमर्श के प्लेटफ़ॉर्म के रूप में सराहा। पाठकों ने इसके विविध विषयों, सरल भाषा और समसामयिक दृष्टिकोण की विशेष प्रशंसा की। हमारा विश्वास है कि यह यात्रा पाठकों को ज्ञान, प्रेरणा और सशक्त कदम बढ़ाने का मार्ग दिखाएगी, और आने वाले वर्ष में भी 'विश्वत' शिक्षा, कौशल और नेतृत्व के नए मानक स्थापित करती रहेगी।

शिक्षकों का फीडबैक

डॉ. योगेश महाजन : "विश्वत ने हमारे विश्वविद्यालय की गतिविधियों और उपलब्धियों को साझा करने का उत्कृष्ट मंच प्रदान किया है। पुस्तक कॉलम छात्रों की रुचि बढ़ाने में मदद करता है।"

डॉ. सीमा शर्मा: "छात्रों की रचनात्मक प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने में विश्वत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुस्तक कॉलम नए ज्ञान और सोच को विस्तारित करता है।"

डॉ. स्वाति पाठक : "विश्वत के माध्यम से विश्वविद्यालय की नई पहल और कार्यक्रम समय पर मिलते हैं। पुस्तक कॉलम साहित्यिक और शैक्षणिक सामग्री की जानकारी देता है।"

प्रो. अर्पिता राजपूत : "विश्वत ने संवाद और सहभागिता को बढ़ावा दिया है। पुस्तक कॉलम छात्रों की आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है।"

डॉ. लवकेश : " संपादकीय और फीचर्स के माध्यम से यह न्यूज़लेटर विश्वविद्यालय की गतिविधियों का संक्षिप्त और प्रभावशाली अवलोकन देता है। पुस्तक कॉलम पढ़ने और सोचने का अवसर प्रदान करता है।"

छात्रों का फीडबैक

रितिका शर्मा: "विश्वत के माध्यम से हमें विश्वविद्यालय की गतिविधियों और छात्र जीवन की जानकारी आसानी से मिलती है। पुस्तक कॉलम पढ़ने का उत्साह बढ़ाता है।"

नेहा यादव : "न्यूज़लेटर में छात्र रचनाओं के साथ-साथ पुस्तक कॉलम भी रोचक और उपयोगी है।"

सुमित यादव: "विश्वत ने हमें विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं की जानकारी समय पर दी। पुस्तक कॉलम नई किताबों से परिचित कराता है।"

शिवम मेहता: "हर अंक में रोचक और नवीन सामग्री होती है, पुस्तक कॉलम पढ़कर मैं कई नई किताबें पढ़ने के लिए उत्साहित हुई।"

भूमि जोशी : "न्यूज़लेटर पढ़ने में आसान और आकर्षक है। पुस्तक कॉलम ने मेरी अध्ययन शैली और ज्ञान को समृद्ध किया।"

भविष्य की दिशा और आभार

हर समापन एक नए प्रारंभ का संकेत है। 'विश्वत' का यह वार्षिक अंक केवल बीते वर्ष की उपलब्धियों का संकलन नहीं है, बल्कि भविष्य की दिशा और हमारे संकल्प का स्पष्ट दर्पण है। बीते 11 महीनों में हमने शिक्षा, छात्र विकास, करियर मार्गदर्शन, विज्ञान और तकनीक, नेतृत्व कौशल और अन्य समसामयिक विषयों पर व्यापक सामग्री प्रस्तुत की, जिससे यह न्यूज़लेटर पाठकों के लिए एक ज्ञान और प्रेरणा का स्थायी स्रोत बन सका। आगे के पथ में हमारा प्रयास रहेगा कि 'विश्वत' और अधिक सारगर्भित, इंटरेक्टिव और उपयोगी बने। इसमें छात्र परियोजनाएँ, करियर और इंटर्नशिप मार्गदर्शन, विज्ञान एवं तकनीक के नवाचार, नेतृत्व कौशल का विकास और सामाजिक योगदान के प्रेरक लेख शामिल होंगे। हमारा विश्वास है कि यह यात्रा पाठकों को ज्ञान, सशक्त कदम और नई दृष्टि प्रदान करती रहेगी। आने वाले वर्ष में भी 'विश्वत' शिक्षा, कौशल और नेतृत्व के नए मानक स्थापित करती रहेगी।

आभार

हम अपने सभी पाठकों, शिक्षकों, छात्रों और विश्वविद्यालय परिवार का हृदय से धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने 'विश्वत' को सहयोग, सुझाव और प्रेरणा प्रदान की। आपके विचार और प्रतिक्रिया हमारे लिए मार्गदर्शन और ऊर्जा का स्रोत रहे हैं। आपका समर्थन हमें प्रेरित करता है कि हम लगातार नए विषयों, आधुनिक दृष्टिकोण और समृद्ध सामग्री के माध्यम से न्यूज़लेटर को और अधिक पाठक-केंद्रित और उपयोगी बनाते रहें।

हम आशा करते हैं कि आने वाला वर्ष 'विश्वत' के लिए और अधिक ज्ञान, नवाचार और सकारात्मक प्रभाव लेकर आए, और यह यात्रा पाठकों के लिए हमेशा प्रेरणा, मार्गदर्शन और सशक्त कदम का साधन बनी रहे।

डिजिटल न्यूजलेटर टीम
विश्वत